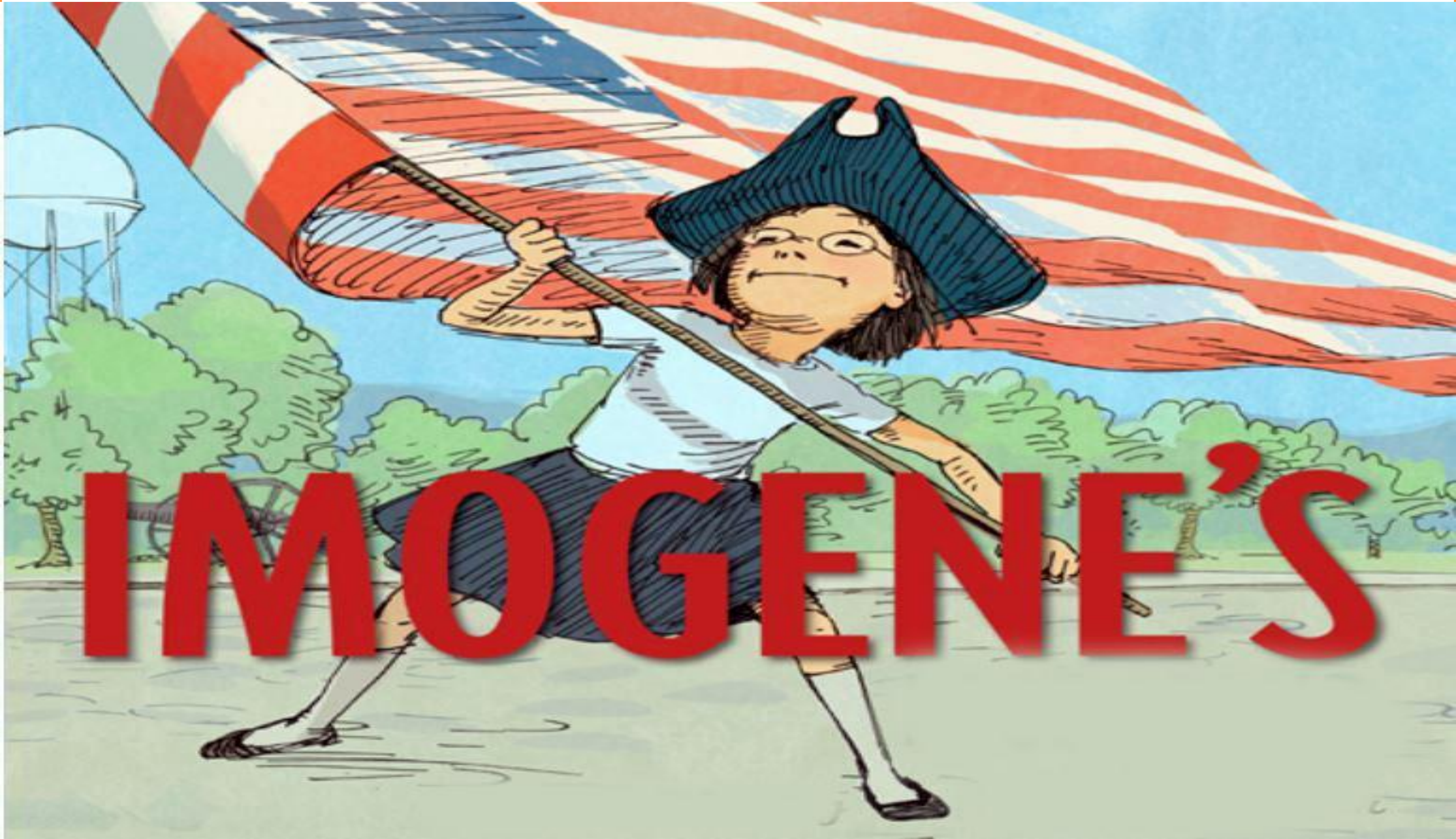
न झुकने वाली इमोजिनी

कैनडेस, चित्र: नैंसी, हिंदी: विदूषक





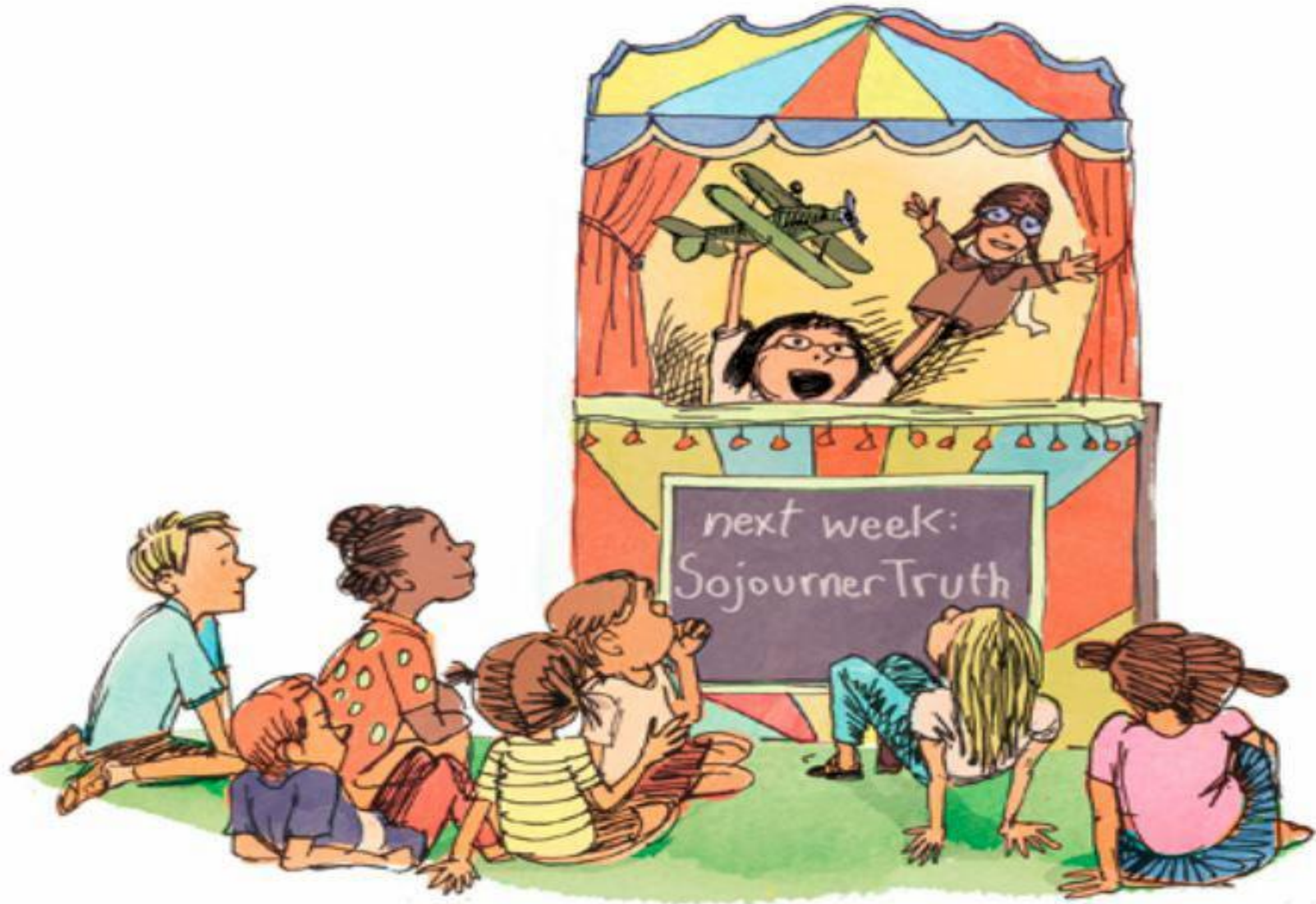
लिड्डेलविल्ले, न्यू हैम्पशायर, इतना छोटा शहर था, कि राज्य के नक़्शे पर उसके लिए एक छोटा बिंदु तक नहीं था. फिर भी लिड्डेलविल्ले एक हरा-भरा गाँव था. वहाँ पर एक दुकान, तीन पैरों वाली एक बिल्ली, और इमोजिनी ट्रिप नाम की एक छोटी लड़की रहती थी.



इमोजिनी को इतिहास से बेहद प्रेम था.

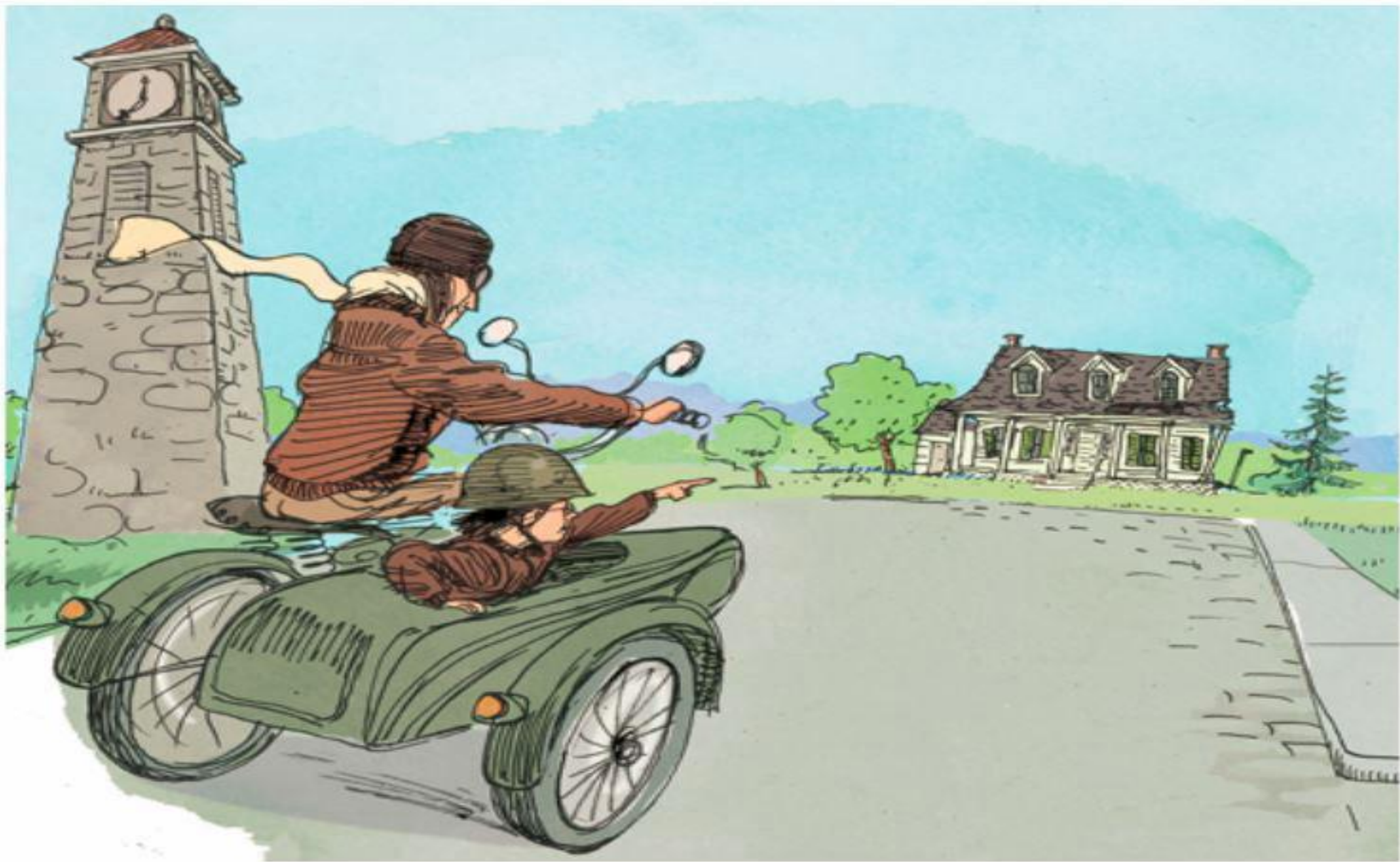
जब वो बिल्कुल छोटी बेबी थी तो उसके मुंह से निकलने वाले पहले शब्द थे,

“आज से सत्तासी साल पहले.”



जब वो KG में थी तो उसने पेंट में ऊँगली डुबोकर ***"ऑरेगोन ट्रेल"*** (ऐतिहासिक पगडण्डी) का चित्र बनाया था.

किंडरगारटेन के शो-टाइम में इमोजिनी बाकी बच्चों को, महत्वपूर्ण ऐतिहासिक महिलाओं की कहानियां सुनाती थी.



अब इमोजिनी का ध्यान **लिड्डेलविल्ले हिस्ट्री सोसाइटी** पर केन्द्रित था. सोसाइटी, सैकड़ों साल पुरानी थी. उसकी इमारत धूल-धूसरित थी और प्राचीन वस्तुओं का एक संग्रहालय थी. इमारत, मुख्य सड़क के अंत में स्थित थी. वहां कोई आता-जाता नहीं था. किसी को उससे प्यार भी नहीं था. एक दिन इमोजिनी ने उसके चरमराते दरवाज़े को धक्का देकर खोला.

“वाह!” इमोजिनी चिल्लाई



“यहाँ कितना कचरा है,” उसके पिताजी ने कहा.

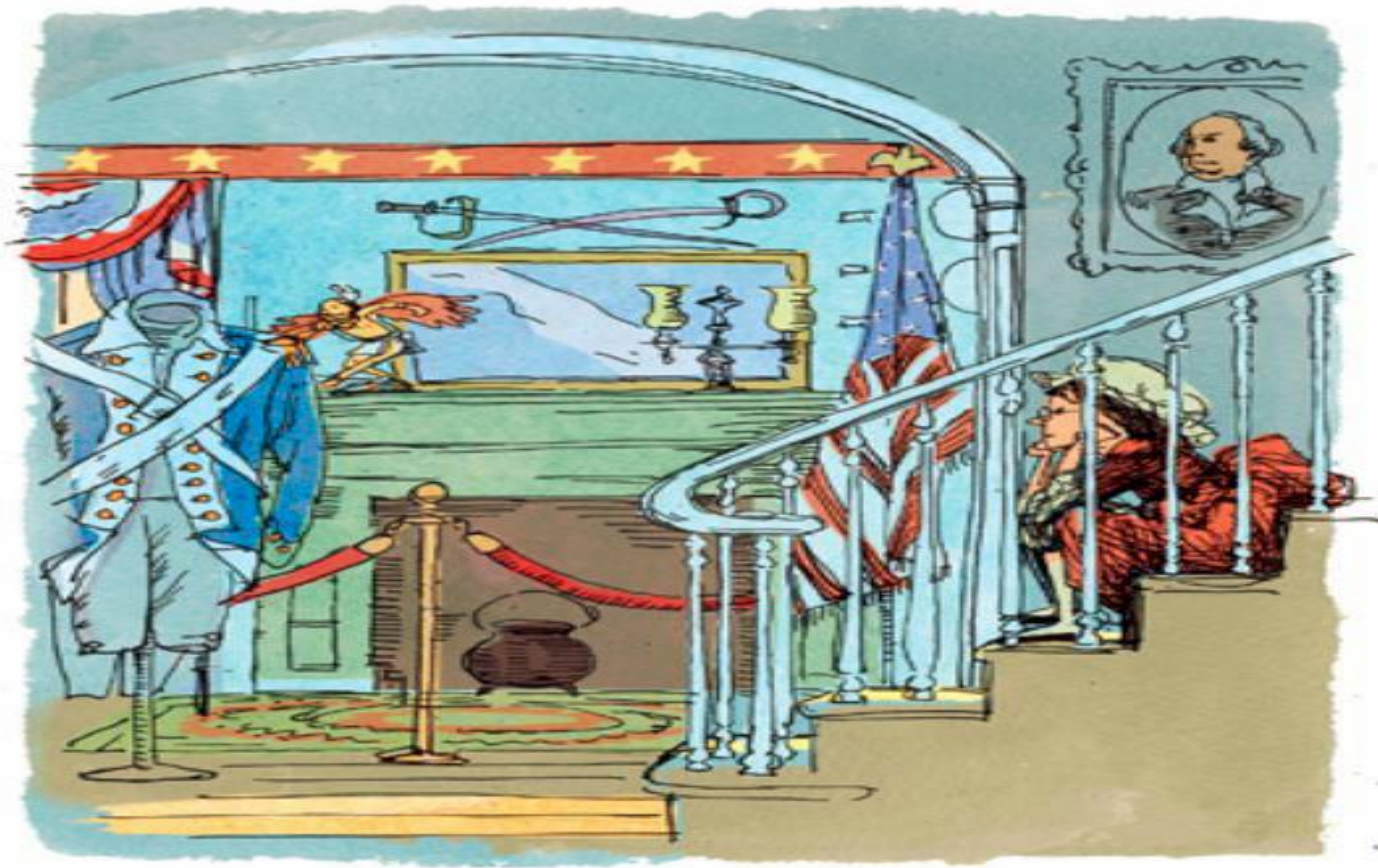
इमोजिनी ने असहमति में अपना सिर हिलाया. “यह कचरा नहीं है, पिताजी,” इमोजिनी ने कहा. “यह इतिहास है. और डॉ. मार्टिन लुथर किंग के अमर शब्दों में, ***“हमें इतिहास गढ़ता है.”***



फिर इमोजिनी ने वहां पर सफाई मुहिम शुरू किया. उसने मकड़ी के जाले साफ़ किये, पुराने पत्रों को फाइल किया, पीले फोटोग्राफ्स को एलबम्स में लगाया, जीवाश्म पहचाने, और सभी चीज़ों को करीने से सजाया. वहां पर एक बड़ा, पुराना ऐतिहासिक पलंग भी था.



सफाई का काम पूरा करने के बाद इमोजिनी ने इंतज़ार किया ....



...वो बस इंतज़ार ही करती रही.



वो अपने शहरवासियों को वहां की अमूल्य ऐतिहासिक धरोहर दिखाना चाहती थी. पर .....

“डेविड क्रोकिट के अमर शब्दों में,” उसने लम्बी सांस भरते हुए कहा, ***“क्या कोई नहीं आएगा.”***



फिर सोमवार को एक आदमी आया. उसने सोसाइटी का दरवाज़ा खटखटाया.



“क्या, इमारत टूटेगी?” इमोजिनी चिल्लाई. पर विलियम मोरिस के अमर शब्दों में, ***हम इन इमारतों के मालिक नहीं हैं, यह इमारतें हमारे पुरखों की थीं और बाद में हमारी संतानों की होंगी.”***

उस आदमी ने अपने कन्धों को उचकाते हुए कहा. “यह बात तुम मुझे नहीं, मेयर को जाकर बताओ.”

इमोजिनी ने वही किया.



इमोजिनी की बात सुनने के बाद मेयर बुत्ज़ ने कहा. “मैं अपने निर्णय पर अडिग हूँ. पुराना ध्वस्त करो, नया रचो.”

“पर फिर हमारी हिस्ट्री सोसाइटी का क्या होगा?” इमोजिनी ने पूछा.

“इतिहास की कौन परवाह करता है?” मेयर ने कहा. “जूतों के फीतों की फैक्ट्री लगेगी तो हमारा शहर, देश नक़्शे पर चमकेगा.” उसके बाद मेयर ने इमोजिनी को दरवाज़े का रास्ता दिखाया.



मेयर के घर से बाहर निकलकर इमोजिनी ने अपना गुस्सा निकाला. “मैं यह कभी नहीं होने दूँगी! जॉन पॉल के अमर शब्दों में, ***“अभी तो मैंने अपनी लड़ाई शुरू ही नहीं की है!”***

उसके बाद इमोजिनी जमकर लड़ी!



मंगलवार को उसने हेलोवीन पर्व पर खरीदी पॉल रिवीर वाली ड्रेस पहनी. उसके बाद इमोजिनी डंडे के घोड़े पर सवार होकर, मुख्य सड़क पर निकली. “देखो बुलडोज़र आ रहे हैं! देखो बुलडोज़र आ रहे हैं!” वो चिल्लाई.

इमोजिनी के चीखने-चिल्लाने पर, किसी ने भी ध्यान नहीं दिया.



अंत में मिस्टर तुत्त्लविट अपनी दुकान से बाहर निकले. “अपने घोड़े की लगाम कसो, छोटी लड़की. क्या तुम्हें पता नहीं कि अगर जूतों के फीतों की फैक्ट्री लगेगी तो हमारा शहर, राज्य के नक़्शे पर चमकेगा?”

इमोजिनी ने अपने घोड़े के डंडे को खींचा. “थिओडोर रूज़वेल्ट के अमर शब्दों में, ***बाल्डरडाश!”***

फिर वो पैर पटकती हुई पिताजी के पास घर पहुंची.



बुधवार की सुबह को इमोजिनी ने अपना प्रचार ज़ारी रखा. वो अपने साथ एक सीढ़ी और लाल-सफ़ेद-नीला रिबन लेकर गई. फिर उसने शहर के हर पेड़, हर स्ट्रीट-लाइट, हर पार्किंग मीटर, हर होर्डिंग, हर डाक-डिब्बे, हर साइकिल स्टैंड, हर बेबी-प्रैम, हर कुत्ते के गले में तिरंगा रिबन बाँधा.

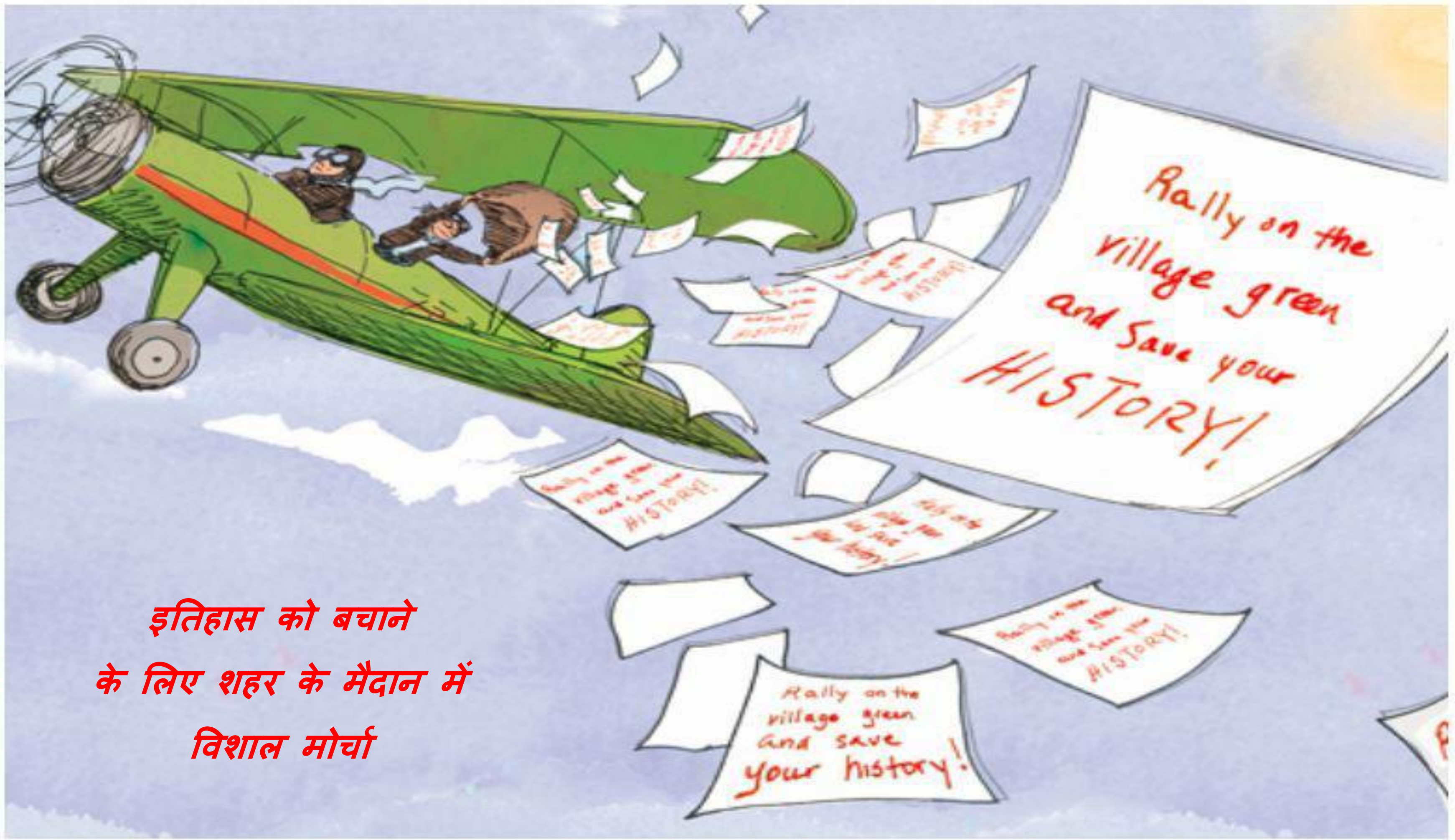
“अपने अतीत को चकनाचूर मत होने दो!” वो चिल्लाई.



पूरे शहर में किसी ने इमोजिनी का साथ नहीं दिया.

अंत में आफिसर दित्ज़विलियम ने कहा, “बेटा तुम्हारे यह रिबन तो बहुत सुन्दर हैं पर जूतों के फीतों की फैक्ट्री लगेगी तो हमारा शहर नक़्शे पर चमकेगा!”

इमोजिनी ने अपनी नाक सिकोड़ी. फिर वो पिताजी के पास घर वापिस आई.



गुरुवार को इमोजिनी ने अपना प्रचार ज़ारी रखा. सुबह उठकर उसने तमाम पोस्टर बनाये. फिर सूरज निकलते ही एक छोटे हवाई-जहाज़ ने लिड्डेलविल्ले के ऊपर सैकड़ों पर्चे गिराए.

पर्चों पर लिखा था, ***"अपने इतिहास को बचाने के लिए शहर के मैदान में विशाल मोर्चा!"*** हरेक पम्फलेट लोगों ने पढ़ा.

अपना इतिहास बचाओ



पर मैदान में कोई नहीं आया. सिर्फ छोटा अब्नेर प्रिट, अपनी तीन पहियों वाली साइकिल पर आया. "इम्मी," उसने कहा, "तुम समझती क्यों नहीं कि जूतों के फीतों की फैक्ट्री लगने से हमारा शहर चमकेगा!" इमोजिनी अब तक इन शब्दों से, तंग आ चुकी थी.



“चीफ जोसफ के अमर शब्दों में,” इमोजिनी ने सुबकते हुए कहा, ***“मेरा दिल बीमार और दुखी है.”***

फिर वो पिताजी के पास घर गई.

फिर शुक्रवार आ गया. इमोजिनी अपनी प्रिय लिड्डेलविल्ले हिस्ट्री सोसाइटी के अन्दर घूमती रही. “गुडबाय फोटोग्राफ्स,” उसने रोते हुए कहा. “गुडबाय जीवाश्म और बड़ा पलंग! गुडबाय, पुरानी चिट्ठियां!”



तभी एक पुरानी चिट्ठी ने उसका ध्यान आकर्षित किया.

इमोजिनी ने उसे एक बार पढ़ा.

फिर दुबारा पढ़ा.

फिर तीसरी बार पढ़ा.



अक्टूबर 16, 1789

प्रिय महाशय,

पिछले मंगलवार को आपने जो मेहमाननवाज़ी दिखाई मैं उसका तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूँ. आपने जो सूप पिलाया वो बेहद उम्दा था, और वो बड़ा पलंग बेहद मुलायम और आरामदेह था. माउंट वेरनोंन छोड़ने के बाद मैं इतने इत्मीनान से कभी नहीं सोया.

आपका नम्र और आज्ञाकारी सेवक

जॉर्ज वाशिंगटन

इमोजिनी ने एक लम्बी सांस ली - जॉर्ज वाशिंगटन? क्या वो वाकई में उस पलंग पर सोए थे?

जल्दी-जल्दी इमोजिनी ने यह खबर सभी महत्वपूर्ण लोगों को पहुंचाई.

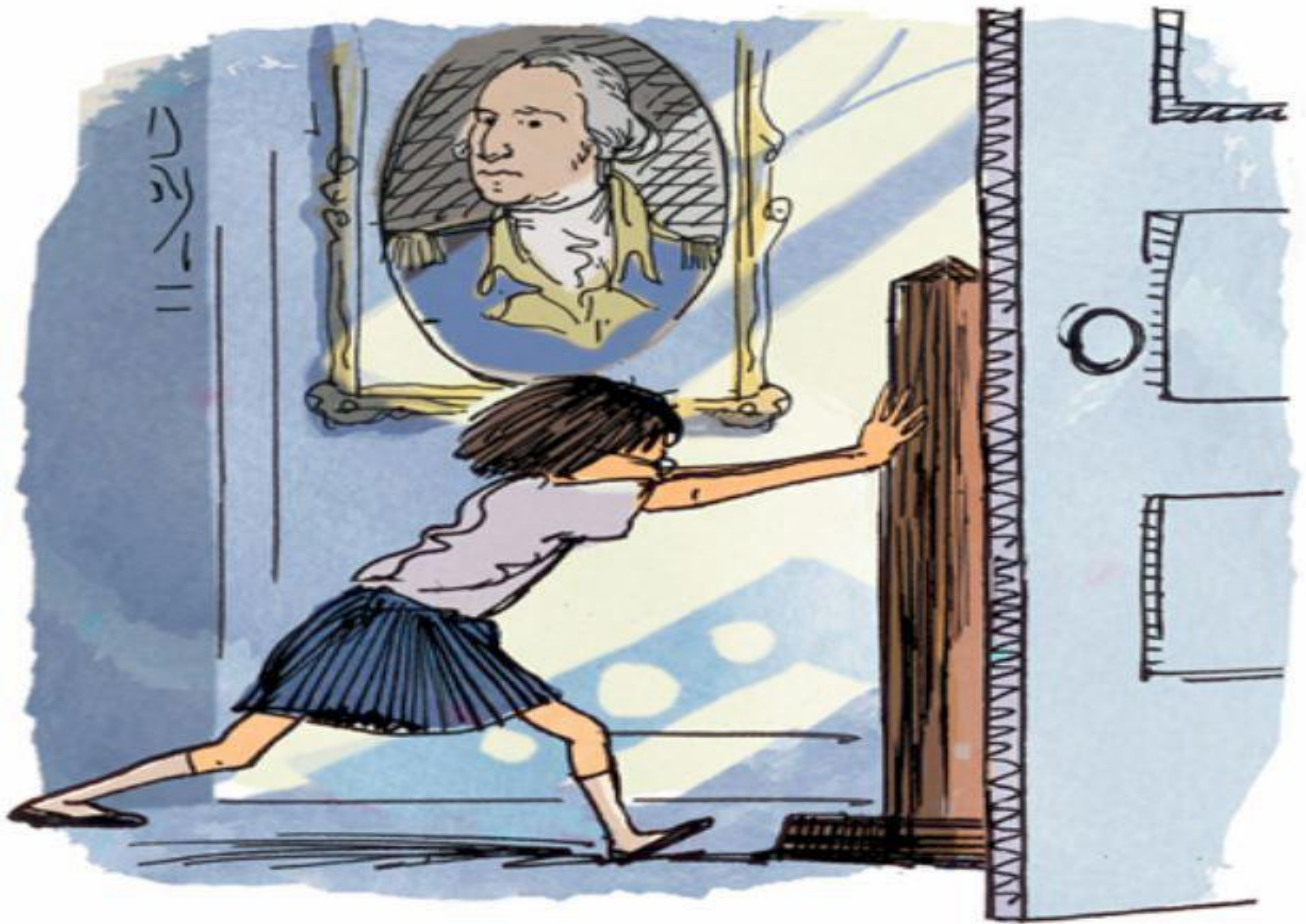


इन महान लोगों में लिड्डेलविल्ले में हिस्ट्री की मशहूर प्रोफेसर कोर्नेलिया पास्टमैटर्स भी शामिल थीं.

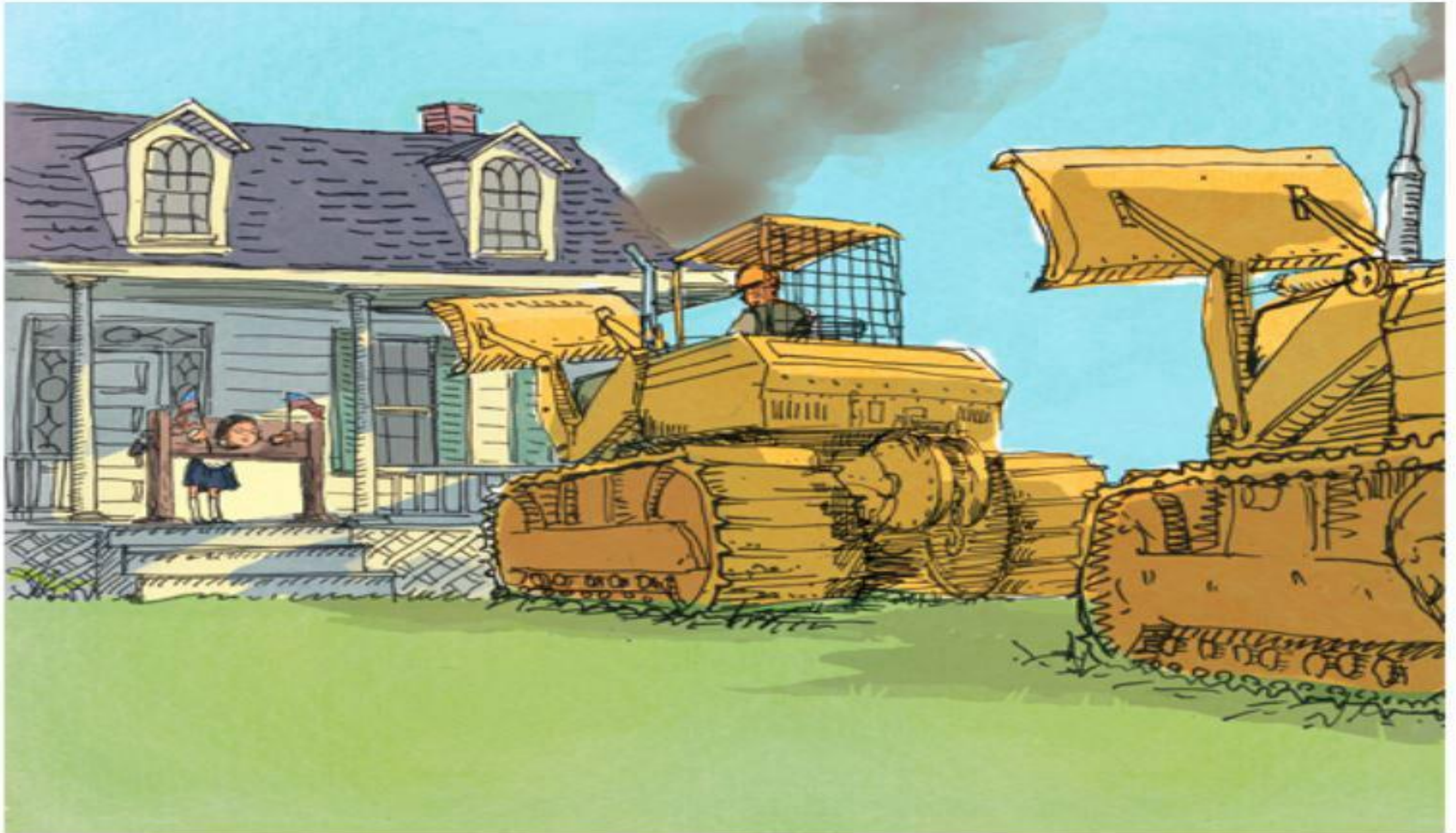
“ज़रा जल्दी करें,” इमोजिनी ने उनसे विनती करते हुए कहा. फिर उसने ईमेल का “सेंड” बटन दबाया. उसके बाद वो फिर से आगे-पीछे घूमने लगी. समय! काश, उसके पास कुछ और समय होता! पर वो बिचारी और क्या कर सकती थी, वो एकदम मजबूर थी?

तभी एक प्रेरणा की लहर उससे आकर टकराई.





फिर क्या था! इमोजिनी अपनी कार्यवाही में लग गई.

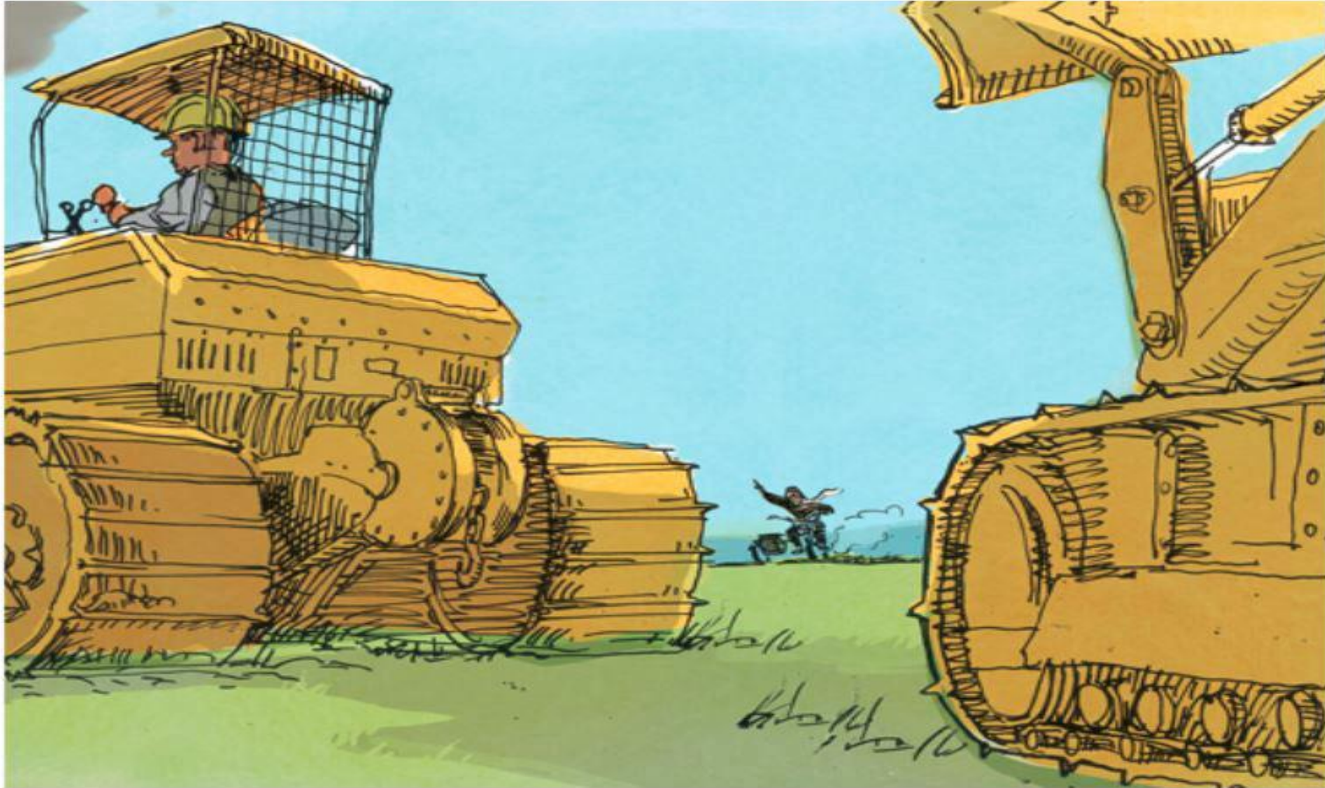


जब शनिवार को बुलडोज़र आए, तब इमोजिनी ट्रिप, उनके लिए पूरी तरह तैयार थी.

"वियतनाम युद्ध विरोधियों के अमर शब्दों के अनुसार," इमोजिनी चिल्लाई, ***"तुम भाड़ में जाओ, मैं यहाँ से कभी नहीं हटूंगी!"***

बुलडोज़रों के इंजनों की आवाज़ अब बंद हुई.

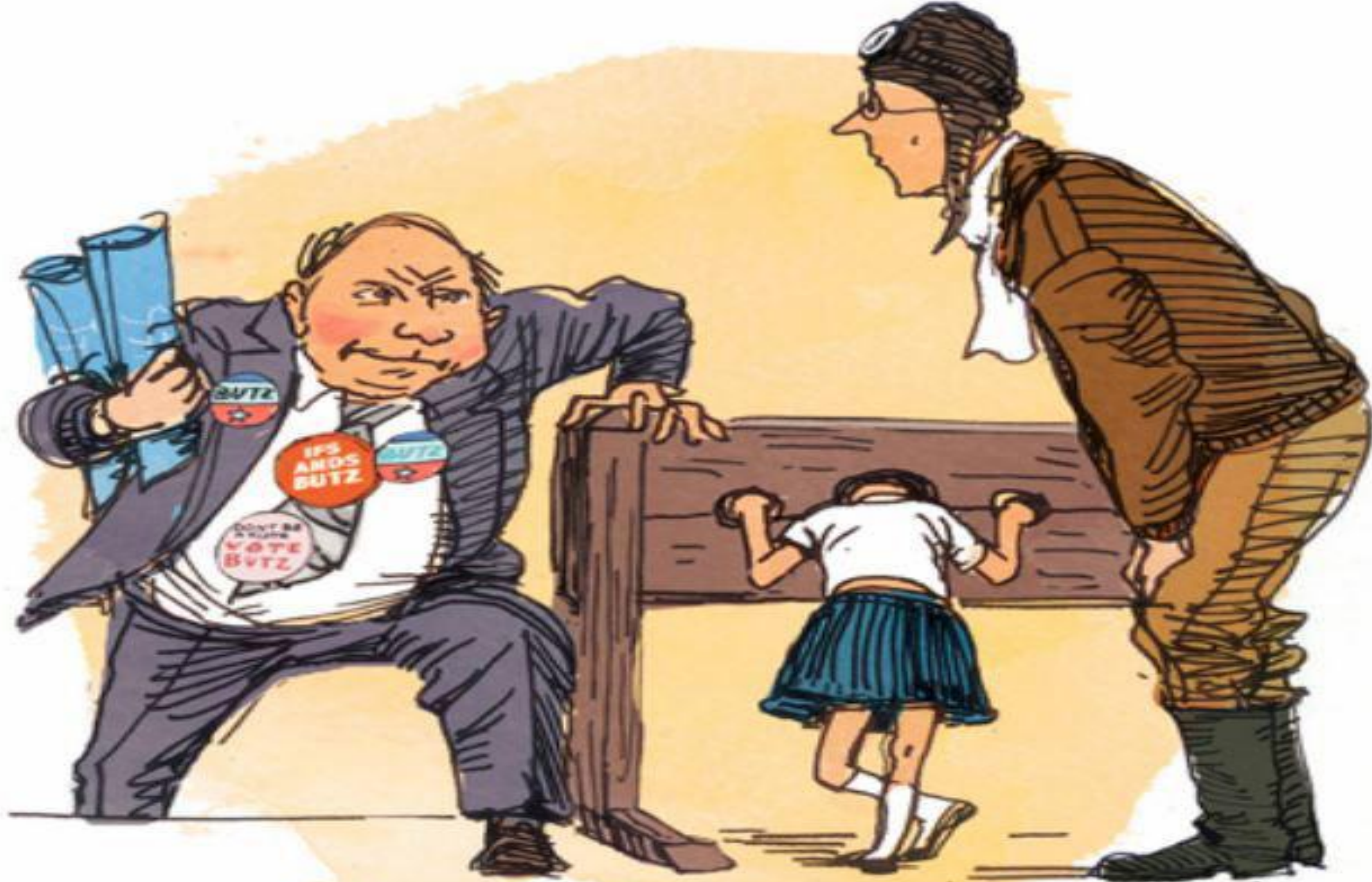
बुलडोज़र इंतज़ार करते रहे... चुपचाप देखते रहे.....



तभी इमोजिनी के पिता दौड़े-दौड़े आए. "इमोजिनी, उनके रास्ते से हटो!"

पर इमोजिनी ने अपने कंधे सीधे करते हुए कहा, "पिताजी, क्या आपको अब्राहम लिंकन के अमर शब्द याद नहीं, ***"बाँझ (ओक) का बड़ा पेड़, असल में एक छोटा बीज होता है जो अपनी मिट्टी से चिपका रहता है."***

“मैं भी अपनी ज़मीन से चिपकी रहूंगी.”



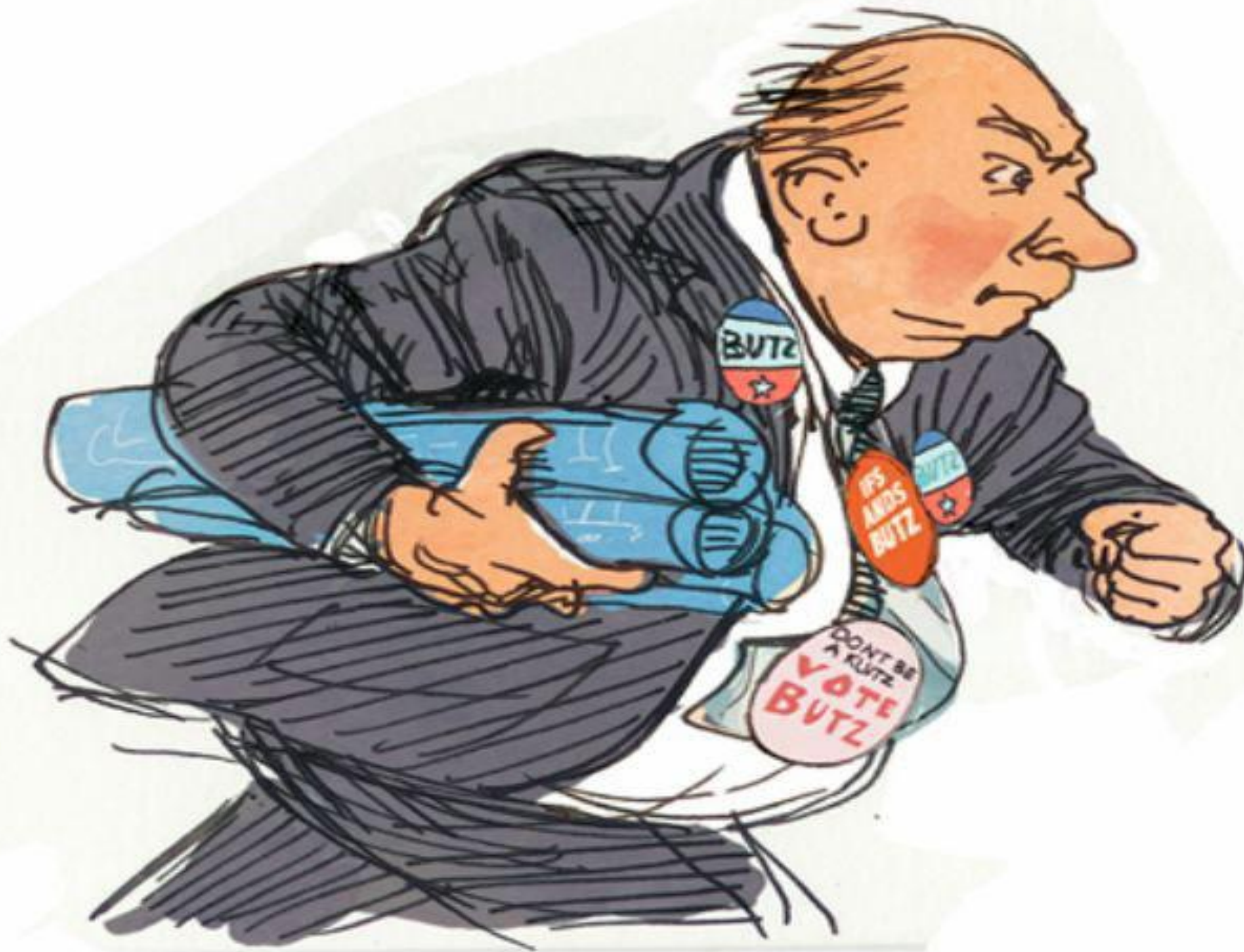
तभी गुस्से में हाँफते हुए मेयर बुत्ज़ सीढ़ियों से चढ़कर आए. “तुरंत अपने आपको खोलो,” उन्होंने आदेश दिया.

“मैं ऐसा हरगिज़ नहीं करूंगी!” इमोजिनी ने रोते हुए कहा.

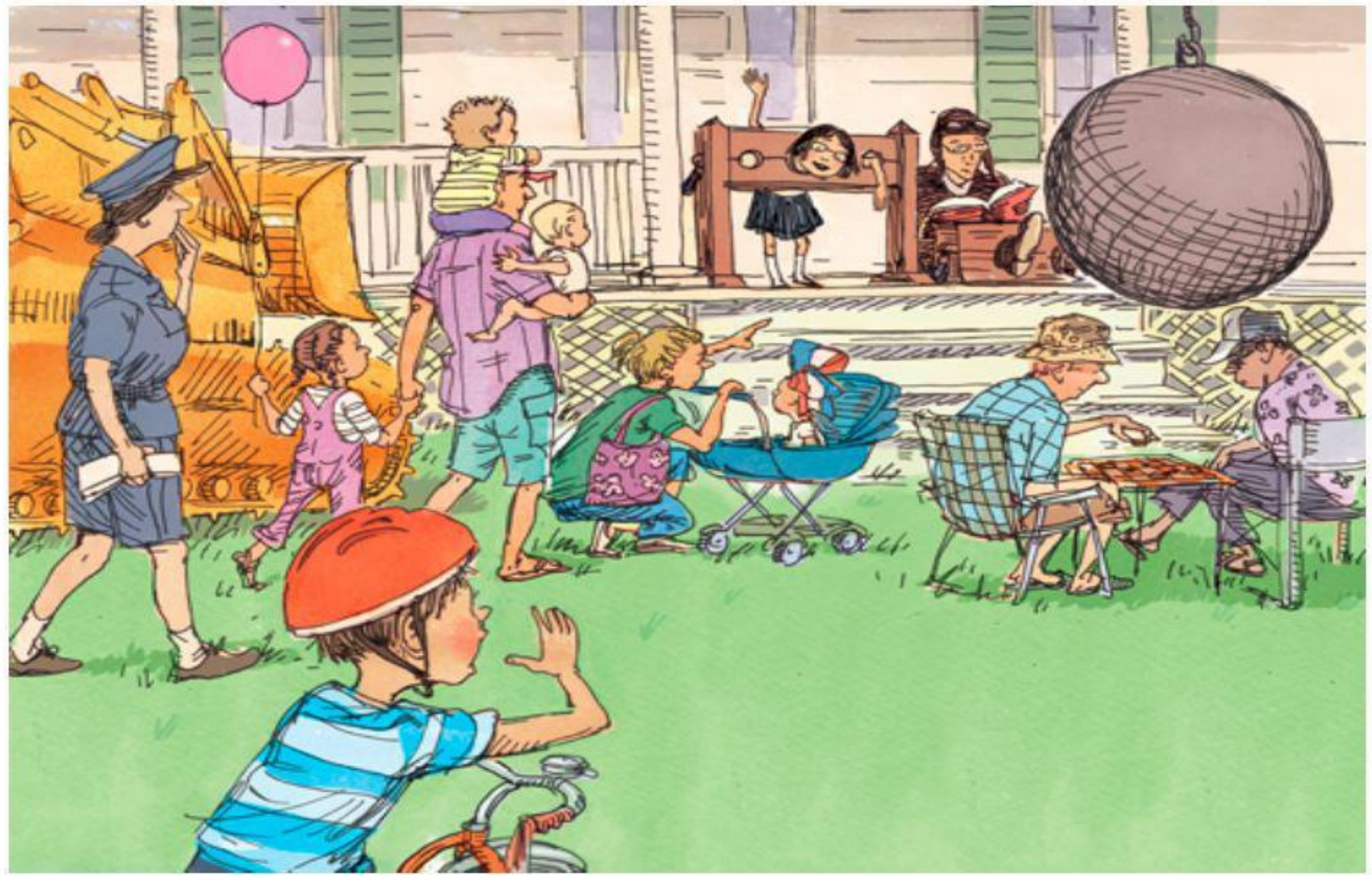
फिर मेयर, इमोजिनी के पिता के पास गए और उनसे विनती की, “अब आप ही कुछ करें.”



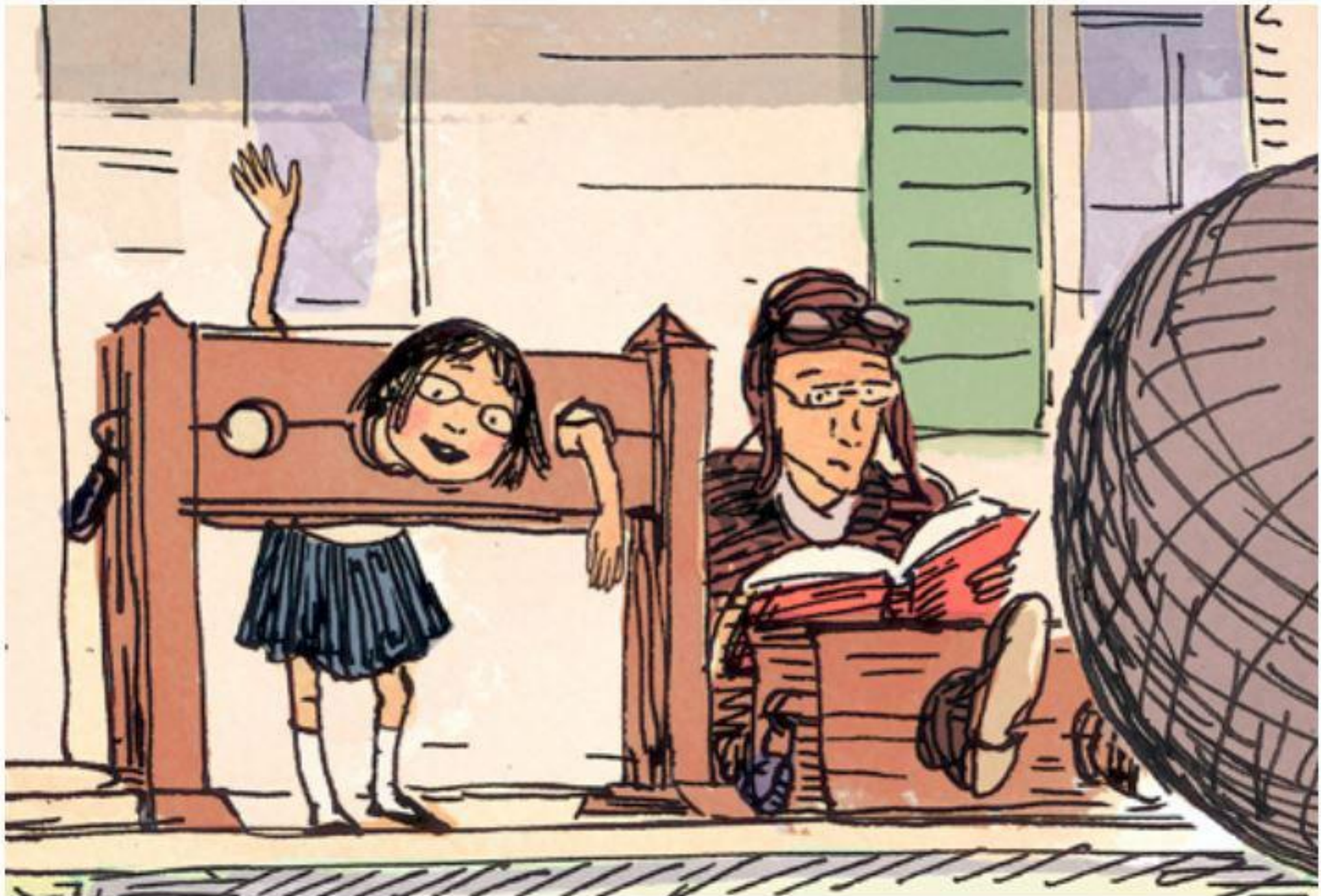
इमोजिनी के पिता ने पहले मेयर को देखा फिर अपनी बेटी की ओर देखा. “नहीं, हम यहाँ से बिल्कुल नहीं हटेंगे!” उन्होंने अंत में रोते हुए कहा.



मेयर बुत्ज़ के नथुने फूलने लगे. "वो छोटी लड़की उस बरामदे में अब नहीं रह सकती. अगर वो नहीं हटे तो कुचलो!" फिर वो आदेश देने के लिए बुलडोज़र वालों की ओर दौड़े.



जब सूरज थोड़ा चमका तो शहर के लोग धीरे-धीरे करके, मामले का जायजा लेने के लिए वहां पर जमा होने लगे. सबसे पहले मिस्टर तुत्त्लविट आए. उसके बाद आफिसर दित्ज़विलियम पहुंचे. उनके बाद अपनी तीन पहियों वाली साइकिल पर छोटा अब्नेर पिट पहुंचा. वो चिल्लाया, “क्यों इम्मी, तुम ठीक-ठाक तो हो, न?”

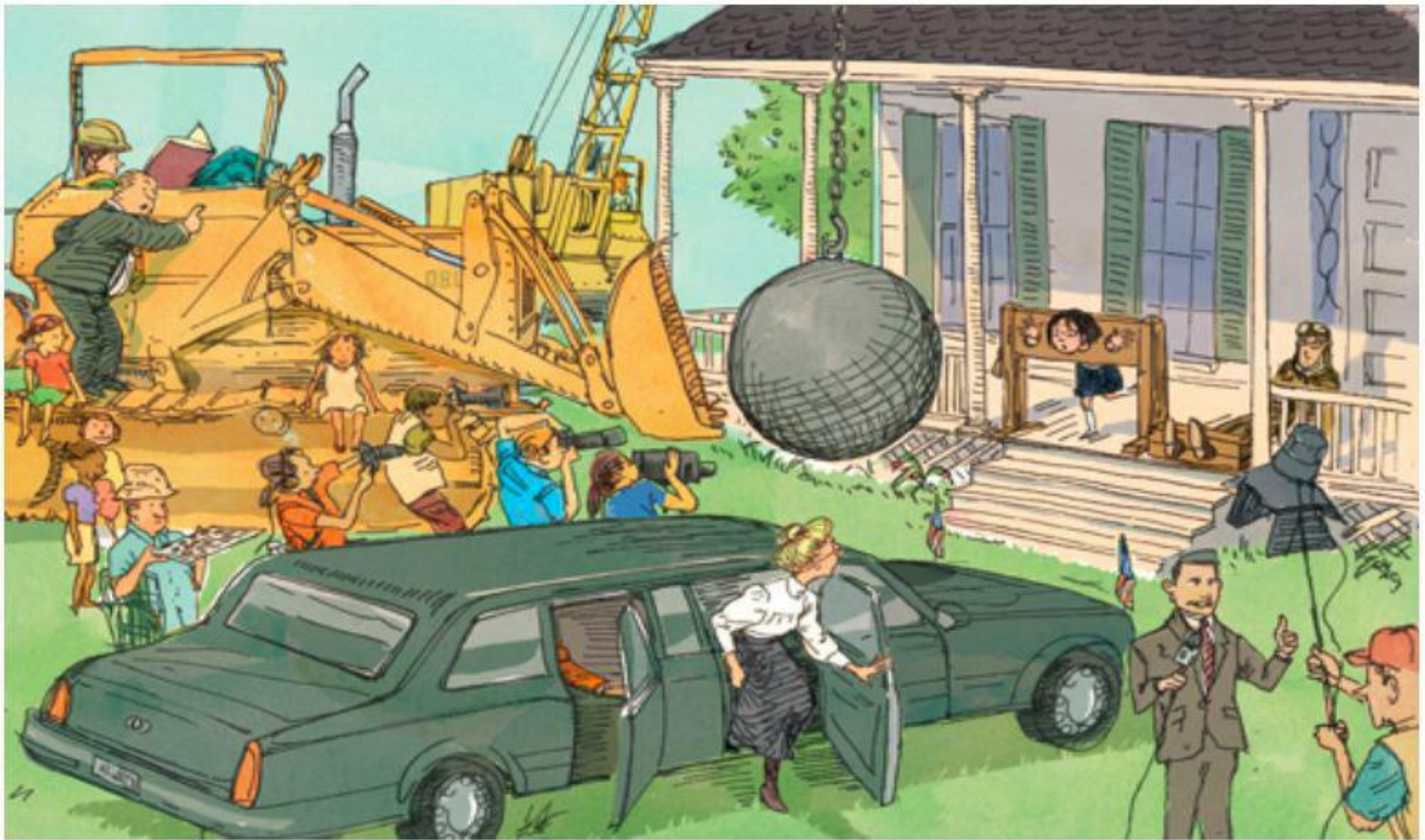


"प्रेसिडेंट मार्टिन वैन बुरेन के अमर शब्दों में, ***"मैं ठीक हूँ,"*** इमोजिनी ने दमदार आवाज़ में उत्तर दिया.



दोपहर तक तमाम टीवी रिपोर्टर्स भी, वहां पहुँच गए. वो उस छोटी लड़की का इंटरव्यू लेना चाहते थे जिसने हिस्ट्री सोसाइटी के बरामदे से हटने से इन्कार किया था.

"एलेअनोर रूज़वेल्ट के अमर शब्दों में, ***"तुम वो काम करो, जो तुम्हें लगता है तुम कभी नहीं कर पाओगे."*** इमोजिनी ने उनसे कहा.



तभी एक काले रंग की कार वहां आकर रुकी. कार का दरवाज़ा खुला और उसमें से प्रोफेसर पास्टमैटर्स बाहर निकलीं! उन्हें देखकर इमोजिनी ने एक लम्बी साँस भरी.

उनके बाद .....



“अमरीका की राष्ट्रपति!” भीड़ उन्हें देखकर चिल्लाई.

राष्ट्रपति सीधे कैमरे की तरफ गईं. “मैं इस प्राचीन इमारत को, एक राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने आई हूँ.” फिर उन्होंने लोगों को पीतल की बनी एक तख्ती दिखाई.

“जॉर्ज वाशिंगटन, यहाँ सोए थे!”

इमोजिनी के मुंह से ख़ुशी की चीख निकली.



“हमारी विजय हुई!”

“इसमें क्या शक है!” प्रोफेसर पास्टमैटर्स ने सिर हिलाते हुए कहा.

“मुझे तुम पर बेहद गर्व है,” इमोजिनी के पिता ने कहा.





फिर अब्नेर पिट आगे आया. “रुको!” वो चिल्लाया. “फिर जूतों के फीतों का क्या होगा?”

“फीते?” मेयर बुत्ज़ ने कहा. “अब फीतों की किसे परवाह?” वो कैमरों के लिए हँसे. “अब हमारा शहर ज़रूर देश के नक़्शे पर होगा.”



शहरवासियों ने ख़ुशी मनाई. बुलडोज़र शोर मचाते हुए वापिस गए.

फिर इमोजिनी ने अपनी जेब से चाबी निकाली और खुद को मुक्त किया.

उसके बाद में सभी लोगों ने - जिसमें मिस्टर बुत्ज़ भी शामिल थे, लिड्डेलविल्ले हिस्ट्री सोसाइटी का दौरा किया.



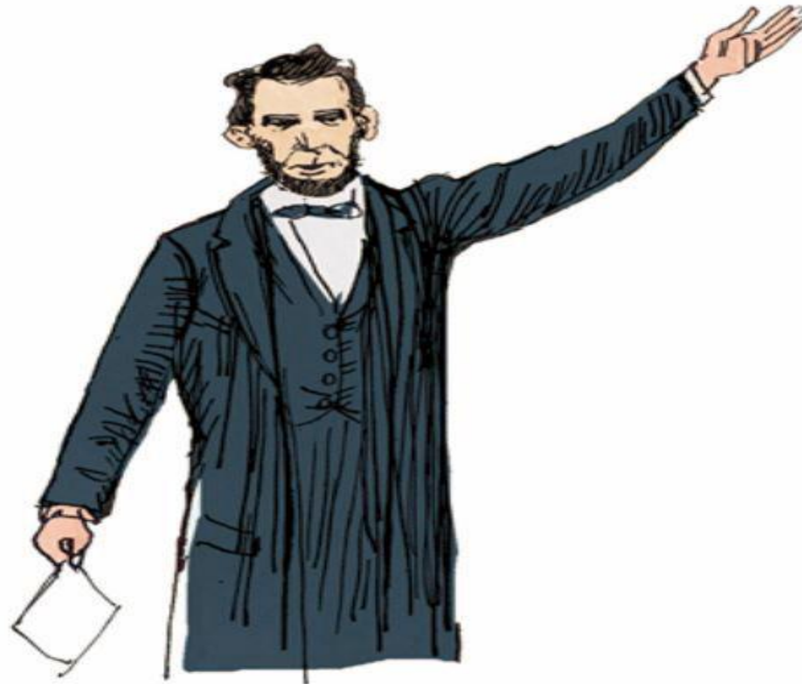
“मेरे अमर शब्दों के अनुसार,” इमोजिनी ने बाद में मेहमानों से बाय-बाय करते हुए कहा. ***“इसमें मुझे बड़ा मज़ा आया!”***

“सच में,” उसके पिताजी ने भी हँसते हुए कहा. “वाकई में बड़ा मज़ा आया.”

इमोजिनी ट्रिप के ऐतिहासिक तथ्य

"सत्तासी साल पहले" अब्राहम लिंकन के गैटिसबर्ग भाषण के, पहले शब्द थे. गृह-युद्ध के दौरान अपने इस भाषण में उन्होंने सभी अमरीकी नागरिकों के लिए समानता की अपील की थी. यह अमरीकी इतिहास का सबसे मशहूर भाषण है. क्या इसमें कोई ताज्जुब है कि, इमोजिनी के वे पहले शब्द थे?

"द ऑरेगोन ट्रेल" 1800 में, अमरीकी पायनियर्स ने अपनी घोड़ागाड़ियों से इस रास्ते को तय किया था. यह रास्ता तपते, सुनसान रेगिस्तान, और बर्फ से ढंकी दुर्गम पहाड़ियों से होकर गुजरता था. इस रास्ते को तय करने के बाद पायनियर्स, पसिफ़िक-तट के आसपास के इलाकों में जाकर बसे.





डॉ. मार्टिन लुथर किंग – नागरिक अधिकारों के महान नेता थे. लोगों की ज़िन्दगी में इतिहास का क्या रोल होता है, उसे स्पष्ट करते हुए उन्होंने एक धार्मिक भाषण में कहा था. ***"हम इतिहास के निर्माता नहीं हैं,"*** उन्होंने कहा. ***"इतिहास हमें बनाता है."***



डेवी क्रोकिट – 1835 में, फ्रंटियर के लोगों ने, टेक्सास के मुक्ति आन्दोलन में हिस्सा लिया. टेक्सास उस समय मेक्सिको में था, अमरीका में नहीं. डेवी क्रोकिट और 200 अन्य लोग एक मिशन कंपाउंड – अलामो के अन्दर घुसे. वहां उन्होंने एक मंच (स्टैंड) बनाने की कोशिश की. दुर्भाग्यवश, वहां मेक्सिकन्स की संख्या बहुत ज्यादा थी. उन्हें अतिरिक्त सैन्य बल की बेहद ज़रुरत थी. जब डेवी को पता चला कि कोई अतिरिक्त सैन्य बल नहीं आ रहा है, तो उन्होंने कहा, ***"क्या कोई नहीं आएगा."*** तेरह दिनों बाद डेवी क्रोकिट और उसके सभी साथियों को मार डाला गया.

विलियम मोरिस – आज से सौ साल पहले इस अँगरेज़ लेखक और कलाकार ने लोगों को वहां की ऐतिहासिक इमारतों को बचाने का आवाहन दिया - ***"हम इन इमारतों के मालिक नहीं हैं, यह इमारतें हमारे पुरखों की थीं और बाद में हमारी संतानों की होंगी."***



जॉन पॉल जोंस – क्रन्तिकारी युद्ध में, इस बहादुर नौ-सैनिक की एक ब्रिटिश जहाज़ के साथ जमकर लड़ाई हुई. जब जॉन पॉल जोंस का अपना जहाज़ डूबने लगा तब वो चिल्लाया, ***"अभी तो मैंने अपनी लड़ाई शुरू ही नहीं की है!"*** अंत में वो लड़ाई जीता और एक महान हीरो बना.



पॉल रिवीर – इतिहास में अपनी मध्य-रात्रि की घुड़सवारी के लिए प्रसिद्द हैं. उसी से अमरीकी क्रांति शुरू हुई. 18 अप्रैल 1775 को, वो बोस्टन से लेक्सिंग्टन, मेसाचुसेट्स अपने घोड़े पर गए. उन्होंने अमरीकी सैनिकों को आगाह किया कि ब्रिटिश सेना आने वाली है. एक किंवदंती के अनुसार घोड़े पर दौड़ते हुए वो चिल्लाए, ***"ब्रिटिश सेना आ रही है! ब्रिटिश सेना आ रही है!"***



थिओडोर "टेडी" रूज़वेल्ट – अमरीका के 26वें राष्ट्रपति को जब कुछ अच्छा लगता था तो वो उसे हमेशा ***"बुली"*** बुलाते थे. जब वो गुस्से में, या बहुत परेशान होते, तो वो चिल्लाते थे ***"बाल्डरडाश!"***



चीफ जोसफ – पसिफिक में नेज़ पर्स इंडियन्स के लीडर थे. 1877 में वो अपने लोगों को मुक्ति के लिए, कनाडा के बॉर्डर तक ले गए. दुर्भाग्यवश, अमरीकी फौज ने उन्हें पकड़ लिया. चीफ जोसफ ने आत्मसमर्पण से पहले यह कहा, ***"मेरे साथियों मेरी बात सुनो – मेरा दिल बीमार और दुखी है. मेरे सामने सूरज खड़ा है – आज से मैं फिर कभी नहीं लड़ूँगा."***



वियतनाम युद्ध विरोधी – 1965-1975 में बीच अमरीका ने, दक्षिण-पूर्वी एशिया के एक बहुत छोटे देश - उत्तरी वियतनाम के साथ युद्ध लड़ा. तमाम अमरीकी नागरिकों ने, इस युद्ध का विरोध किया. मोर्चों में वियतनाम विरोधी अक्सर यह कहते, ***"तुम भाड़ में जाओ, हम यहाँ से कभी नहीं हटेंगे!"*** इमोजिनी ने इस कथन को कुछ बदला, क्योंकि वो गाली नहीं दे सकती थी.

प्रेम करो,
युद्ध नहीं



वियतनाम युद्ध
बंद करो!



अब्राहम लिंकन – जब अमरीका के सोलहवें राष्ट्रपति से पूछा गया, कि इतनी सारी चीज़ों में फेल होने के बावजूद वो आखिर अमरीका के प्रेसिडेंट कैसे बने तो उन्होंने कहा, "देखो एक बहुत पुरानी कहावत है - ***"बाँझ (ओक) का बड़ा पेड़, असल में एक छोटा बीज होता है जो अपनी मिट्टी से चिपका रहता है."***



मार्टिन वैन बुरेन – क्यूंकि अमरीका के आठवें राष्ट्रपति का जन्म किंडरहुक में हुआ था इसलिए लोग उन्हें प्यार से "ओल्ड किंडरहुक" बुलाते थे. राजनैतिक रैलियों में वैन बुरेन को यह चिल्लाना पसंद था, ***"क्योंकि मैं "ओल्ड (O) किंडरहुक (K)" हूँ इसलिए मैं ओके (OK) हूँ!"***



एलेअनोर रूज़वेल्ट एक बहुत व्यस्त महिला थीं. 1933 से 1945 तक वो "फर्स्ट लेडी" (अमरीकी राष्ट्रपति की पत्नी) थीं. साथ में वो नागरिक अधिकारों और सामाजिक बदलाव की कार्यकर्ता भी थीं. वो लेखक होने के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र संघ में अमरीकी प्रतिनिधि भी थीं. अपनी पुस्तक *यू लर्न बाय लिविंग* में उन्होंने लोगों को यह सलाह दी: ***"तुम वो काम करो, जो तुम्हें लगता है तुम कभी नहीं कर पाओगे."***



इमोजिनी ट्रिप को इतिहास इसलिए याद करेगा क्योंकि उसने न केवल अकेले अपनी स्थानीय हिस्ट्री सोसाइटी को बचाया, पर उसने यह अमर शब्द भी कहे, ***"इसमें मुझे बड़ा मज़ा आया!"***



कैंडिस फ्लेमिंग बच्चों की किताबों की मशहूर लेखिका हैं. उन्होंने बच्चों की कई पुस्तकें लिखीं हैं जिनके लिए उन्हें अनेकों पुरुस्कार मिले हैं.